मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय
जामिया मिलिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के शैक्षिक अध्ययन विभाग को प्रदान की गई- असम की चाय जनजातियों को सशक्त करने के लिए 1.38 करोड़ रुपये की आईसीएसएसआर परियोजना

नई दिल्ली, 15 जुलाई, 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के शिक्षा संकाय के शैक्षिक अध्ययन विभाग (डीईएस) को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), भारत द्वारा वित्तपोषित 1.38 करोड़ रुपये का एक प्रतिष्ठित लोंगिट्युडिनल रिसर्च प्रोजेक्ट मिला है। यह परियोजना सामाजिक एवं मानव विज्ञान में आईसीएसएसआर लोंगिट्युडिनल स्टडीज के द्वितीय आह्वान के अंतर्गत है। "डिजिटल और गैर-डिजिटल कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से असम की चाय जनजातियों का सशक्तिकरण" शीर्षक वाली इस परियोजना का उद्देश्य असम में चाय बागान श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण पर कौशल विकास पहलों के प्रभाव की जाँच करना है।

जामिया के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और कुलसचिव प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धी शोध अनुदान को प्राप्त करने में सराहनीय उपलब्धि के लिए टीम को बधाई दी और इस परियोजना की असम के चाय बागान श्रमिकों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता को स्वीकार किया। कुलपति और कुलसचिव दोनों ने कहा कि यह पूर्वोत्तर पर शोध अध्ययनों को आगे बढ़ाने में जामिया की गहरी रुचि को बढ़ावा देगा।

पिछले सप्ताह ही, 8 जुलाई, 2025 को, प्रो. आसिफ और प्रो. रिज़वी ने जामिया में पूर्वोत्तर के छात्रों के लिए 400 बिस्तरों वाले छात्रावास के निर्माण पर चर्चा करने के लिए माननीय केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास और शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार जी के साथ एक बहुत ही उपयोगी बैठक की थी। माननीय मंत्री ने इस परियोजना के लिए अपना पूर्ण समर्थन और समर्थन देने का वादा किया था।

प्रो. आसिफ़ ने कहा, "असम की चाय जनजातियों पर केंद्रित इस अध्ययन के साथ, जामिया देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अपने शोध कार्य को और बढ़ा सकेगा।" प्रो. आसिफ़ ने आगे कहा, "मुझे विश्वास है कि असम की चाय जनजातियों से एकत्रित प्रत्यक्ष आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने, आजीविका के अवसरों में सुधार लाने और उनकी कार्य-प्रणालियों की गहन जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे, साथ ही इन समुदायों के जीवन, परंपराओं और अनुभवों के समृद्ध, विशिष्ट और मूल्यवान सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों पर भी प्रकाश डालेंगे।"

प्रो. रिज़वी ने इस महत्वपूर्ण शोध परियोजना के कार्यान्वयन में टीम की सफलता की कामना करते हुए कहा, "ऐसी शोध परियोजना न केवल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस पर अभी तक कम अध्ययन हुआ है, बल्कि इसलिए भी कि इसके निष्कर्षों में इस क्षेत्र में भविष्य की नीति और विकास परियोजनाओं को आकार देने की क्षमता है।" प्रो. रिज़वी ने आगे कहा, "जामिया सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक और भाषाई रूप से हाशिये पर पड़े समुदायों के जीवन पर शिक्षण और शोध करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसका उद्देश्य उन्हें सशक्त बनाना है। असम की चाय जनजातियों पर यह दीर्घकालिक अध्ययन इस दिशा में एक बड़ा कदम है।"

डॉ. काज़ी फ़िरदौसी इस्लाम को इस परियोजना का समन्वयक नियुक्त किया गया है, जबकि शैक्षिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. कौशल किशोर; जामिया मिलिया इस्लामिया के शिक्षा संकाय के पूर्व अध्यक्ष एवं डीन तथा एसजीटी विश्वविद्यालय के सलाहकार प्रो. अहरार हुसैन; गुवाहाटी विश्वविद्यालय की प्रो. निवेदिता गोस्वामी; शैक्षिक अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. समीर बाबू एम; और शैक्षिक अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. ज़ेबा तबस्सुम परियोजना निदेशक के रूप में कार्य करेंगी।

अनुसंधान, आँकड़ा संग्रह और विश्लेषण से जुड़ी यह परियोजना, मिश्रित-पद्धति अनुसंधान की समझ को और सुदृढ़ करने के लिए, गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान की सैद्धांतिक अवधारणाओं को व्यावहारिक परिस्थितियों में लागू करने के लिए टीम के अनुसंधान और विश्लेषणात्मक कौशल का उपयोग करेगी। इस दीर्घकालिक अध्ययन का उद्देश्य असम के चाय-बागान क्षेत्रों में वास्तविक समस्याओं का समाधान करने के लिए आजीवन सीखने और निरंतर सुधार की एक शोध मानसिकता विकसित करना है, जिससे समाज की बेहतरी में योगदान मिल सके। यह परियोजना नियोजन और समयबद्ध क्रियान्वयन की प्रक्रिया के माध्यम से समय प्रबंधन, संगठन और लक्ष्य-निर्धारण के विकास को भी सुगम बनाएगी।

इसके अलावा, इस शोध अनुदान से शैक्षिक अध्ययन विभाग के भीतर एक अधिक गहन शोध संस्कृति को बढ़ावा मिलने, उसकी शोध क्षमताओं में वृद्धि होने और उच्च-गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावशाली शोध करने और प्रदान करने के मामले में विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और वैश्विक प्रतिष्ठा में योगदान मिलने की उम्मीद है।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी